विचार बिन्दु

सारा हिन्दुस्तान गुलामी में घिरा हुआ नहीं है। जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा पाई है और जो उसके पाश में फँस गए हैं, वे ही गुलामी में घिरे हुए हैं।

–महात्मा गाँधी

यह तो क्रूर और अमानवीय है!

मैं बहुत बरस पहले नौकरी से रिटायर हो चुका हूं। नौकरी भी सरकारी थी, जिसके लिए यह बात बार-बार कही जाती है कि वहां काम का दबाव कम होता है। फिर मैंने तो पढ़ाने की नौकरी की जिसे और अधिक सुविधापूर्ण माना जाता है। जब मैंने नौकरी की, तब से अब तक आते-आते हालात बहुत बदल चुके हैं। अब सरकारी नौकरियां कम होती जा रही हैं क्योंकि सरकार कहे या बिना कहे अपने बहुत सारे काम निजी क्षेत्र की तरफ खिसकाती जा रही है। निजी क्षेत्र का सोच बहुत अलग होता है। वह अपने लाभ-हानि को सर्वोपरि समझता है। सरकार जैसी उदारता और जन कल्याण की भावना उसमें नहीं होती है। सरकार अगर किसी को नौकरी देती थी तो उसके पीछे काम करवाने के साथ-साथ आजीविका देने और एक सम्मानप्रद ज़िंदगी जीने के अवसर उपलब्ध कराने का भाव भी होता था। निजी क्षेत्र का सोच अलग होता है। बेशक निजी क्षेत्र बहुत बार सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्र से बहुत ज़्यादा वेतन और अन्य सुविधाएं देता है, लेकिन यह करते हुए वह इस बात पर भी नज़र रखता है कि आपको जितना दे रहा है, उतना या उससे अधिक आपसे ले ले। हां, अपनी कल्याणकारी छवि बनाए रखने के लिए वह छोटे-मोटे दान वगैरह भी करता और उनका भरपूर प्रचार करता रहता है। सीएसआर (कॉरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी) हमने बहुत बार सुना है। ऐसा नहीं है कि सारा का सारा निजी क्षेत्र ऐसा है, लेकिन अपवाद बहुत ही कम हैं।

हाल में एक बहुत बड़ी भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी एलएंड टी (लार्सन एण्ड टूब्रो) के चेयरमैन एवं मैनेजिंगडाइरेक्टर एसएन सुब्रह्मण्यम ने जब कर्मचारियों के सप्ताह में नब्बे घंटे काम करने की बात कही तो पूरे देश में इस पर चर्चाएं हुईं। उन्होंने कहा, ''चीनी लोग सप्ताह में 90 घंटे, जबकि अमरीकी लोग सप्ताह में केवल 50 घंटे काम करते हैं। अगर आपको दुनिया में सबसे ऊपर रहना है तो हफ्ते में 90 घंटे काम करना होगा।'' वे इतना कहकर ही नहीं रुके। अपनी बात को और वज़नदार बनाते हुए उन्होंने कहा, ''अगर मैं रविवार को भी काम करवा पाता तो मुझे खुशी होगी, क्योंकि मैं ख़ुद रविवार को काम करता हूं। लोगों को रविवार को ऑफिस जाना चाहिए। घर पर रहकर क्या करेंगे और कब तक बीबी को घूरेंगे?'' मैं अनुमान लगाता हूं कि जब वे रविवार को भी काम करवाना चाहते हैं तो पांच दिन वाले सप्ताह, जिसमें शनिवार की भी छुट्टी होती है, के बारे में तो सोचते ही नहीं होंगे। मैंने कैलकुलेटर लेकर गिनती की तो पाया कि अगर सप्ताह में पांच दिन काम करते हैं तो सप्ताह के नब्बे घंटे पूरे करने के लिए हर दिन अठारह घंटे काम करना होगा। यह शायद संभव न हो, तो फिर सप्ताह में छह दिन के हिसाब से गणना की। पाया कि हर रोज़ पंद्रह घंटे काम करेंगे तो सप्ताह के नब्बे घंटे पूरे होंगे। और अगर सातों दिन काम करें तो लगभग तेरह घंटे (उससे थोड़ा ही कम) काम करने पर सप्ताह के नब्बे घंटे पूरे होंगे। अगर हम सातों दिन वाली बात (जो बहुत व्यावहारिक नहीं है) भी मान लें तो कर्मचारी सुबह नौ बजे ऑफिस पहुंचे और बिना खाये-पिए रात दस बजे तक काम करे, तब वह सुब्रह्मण्यम साहब की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकेगा। अब यह तो संभव है नहीं कि हर कर्मचारी अपने ऑफिस के परिसर में ही रहता हो। उसे घर से ऑफिस आने-जाने में भी कुछ समय लगेगा। अगर एक तरफ एक घंटा भी लगे तो वह सुबह आठ बजे घर से निकले और रात ग्यारह बजे तक घर पहुंचे। सप्ताह में एक दिन उसे छुट्टी का मिले, उस दिन वह अन्य ज़रूरी काम निपटाए। अगर पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हों, और उनके एक-दो बच्चे भी हों तो क्या स्थिति बनेगी? बच्चों को तो शायद अनाथालय में ही भेजना होगा।

एलएंड टी के चेयरमैन महोदय जब ख़ुद के लिए यह कहते हैं कि वे रविवार को भी काम करते हैं, तब वे इस बात को क्यों नहीं बताते कि उनका वेतन कितना है। एक जानकारी के अनुसार वर्ष 2023-24 में उन्हें 51.05 करोड़ वार्षिक वेतन मिला था और यह उनकी कंपनी के कर्मचारियों के औसत वेतन का 534.57 गुना था। क्या वे अपने कर्मचारियों को भी वैसा ही वेतन देना चाहेंगे?

मैं साहित्य का विद्यार्थी हूं और कला-साहित्य-संगीत-फ़िल्म वगैरह में रुचि रखता हूं। मुझे मिर्ज़ा ग़ालिब याद आए, और उनके साथ ही गुलज़ार भी याद आए। मिर्ज़ा ग़ालिब की एक बहुत लोकप्रिय ग़ज़ल मुद्दत हुई है यार को मेहमां किए हुए के एक अत्यधिक लोकप्रिय शेर को आधार बनाकर गुलज़ार ने फ़िल्म 'मौसम' (1975) के लिए एक गाना लिखा था, जिसमें ग़ालिब के जी ढूंढता है को बदल कर दिल ढूंढता है कर दिया था। इसमें गुलज़ार ने लिखा था-दिल ढूंढता है फिर वही फुर्सत के रात दिन/ बैठे रहें तसव्वुर-ए-जाना किए हुए/ जाड़ों की नर्म धूप और आंगन में लेटकर/ आंखों पर खींच कर तेरे आंचल के साये को/ औंधे पड़े रहें कभी करवट लिये हुए।।''

मैं सोचने लगा हूं, सुब्रह्मण्यम साहब के कर्मचारी के लिए तो ऐसा सोचना भी भयंकर वाला अपराध होगा। वे तो पत्नी (सॉरी, बीबी) को घूरने तक नहीं देना चाहते, आंगन में उसके आंचल के साये को आंखों पर डाल कर लेटने की क्या बात करें! इस गीत के बारे में सोचते-सोचते मुझे एक और गीत याद आया, जो मेरा बहुत पसंदीदा है। असल में लता मंगेशकर और हेमंत कुमार ने हिंदी फ़िल्मों के लिए कुछ बेहद सुरीले युगल गीत गाए हैं। यह उनमें से एक है। 1954 में बनी फ़िल्म 'बादशाह' के लिए हसरत जयपुरी के लिखे एक गीत 'आ नीले गगन तले प्यार हम करें में ये पंक्तियां आती हैं: ये शाम की बेला ये मधुर मस्त नज़ारे/ बैठे रहें हम तुम यूँ ही बांहों के सहारे/वो दिन ना आए इंतज़ार हम करें'' और कम्बख़्त नायिका इतने भर से संतुष्ट नहीं होती है। गीत में आगे वह कहती है: तू माँग का सिंदूर तू आँखों का है काजल/ ले बांध ले दामन के सलारों से ये आँचल/ सामने बैठे रहो श्रृंगार हम करें..।'' अब सोचिये, सुबह आठ बजे घर निकल कर पूरे दिन ऑफिस में खटकर रात ग्यारह बजे घर लौटने वाले किस कर्मचारी के लिए अपनी 'बीबी' को शृंगार करते देखना मुमकिन हो सकता है! यहीं यह भी याद कर लिया जाना उचित होगा कि सुब्रह्मण्यम साहब के इस वक्तव्य से पहले एक अन्य अति प्रतिष्ठित भारतीय कंपनी इन्फोसिस के को-फाउण्डर नारायण मूर्ति जी भी सप्ताह में सत्तर घंटे काम करने की सलाह दे चुके हैं। इन दोनों बयानों को एक साथ पढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे यहां निजी क्षेत्र की आकांक्षा एक ही है, कि अपने कर्मचारी का जितना दोहन करना संभव हो कर लिया जाए। इस दोहन का उसकी शारीरिक और मानसिक सेहत पर, उसके पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस बारे में उनको कोई परवाह नहीं है।

यह बात हर कोई जानता है कि हर व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक अवस्था समान नहीं होती है। कोई कम काम कर सकता है, कोई ज़्यादा। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि एक सप्ताह में औसतन पैंतीस से चालीस घंटे काम करवाया जाना आदर्श है। उनका कहना है कि अगर किसी व्यक्ति से सप्ताह में पचास या उससे अधिक घंटे काम लिया जाएगा तो यह बात उसके मानसिक तनाव, थकन और अनेक शारीरिक व्याधियों का कारण बन सकती है। इधर के अनेक अध्ययनों ने तो यह भी बताया है कि जो लोग सप्ताह में पच्चीस से चालीस घंटे काम करते हैं उनकी उत्पादकता और मानसिक स्वास्थ्य दोनों ही बेहतर होते हैं। शायद इसीलिए यह भी सलाह दी जाती है कि काम के बीच ब्रेक किया जाना चाहिए और परिवार, दोस्तों और अपनी रुचियों के लिए भी नियमित रूप से समय निकालना चाहिए। लेकिन यह सब तो तभी संभव होगा जब काम के घंटे कम होंगे। सप्ताह में नब्बे घंटे काम करने की अनुशंसा करते हुए क्या इन बातों की तरफ ध्यान नहीं गया होगा? अगर न गया हो तो जाना चाहिए।

एक आदर्श स्थिति तो यह हो कि कर्मचारी से उसकी क्षमता के अनुसार काम लिया जाए, और उसे तदनुसार ही वेतन भी दिया जाए। यह बात तो न्याय संगत नहीं है कि किसी से काम तो दो व्यक्तियों का लिया जाए और वेतन उसे एक ही व्यक्ति का दिया जाए। एलएंड टी के चेयरमैन महोदय जब ख़ुद के लिए यह कहते हैं कि वे रविवार को भी काम करते हैं, तब वे इस बात को क्यों नहीं बताते कि उनका वेतन कितना है। एक जानकारी के अनुसार वर्ष 2023-24 में उन्हें 51.05 करोड़ वार्षिक वेतन मिला था और यह उनकी कंपनी के कर्मचारियों के औसत वेतन का 534.57 गुना था। क्या वे अपने कर्मचारियों को भी वैसा ही वेतन देना चाहेंगे? और बात केवल वेतन की नहीं है। अधिक वेतन का आकर्षण या उसे प्राप्त करने की विवशता किसी को मौत के मुंह में ले जाए तो क्या ले जाने दिया जाना चाहिए? यह याद किया जा सकता है कि पूरी दुनिया में छुट्टियों का प्रावधान क्यों किया जाता है? अपने कर्मचारियों से प्रति सप्ताह नब्बे घंटे काम लेने की आकांक्षा रखने वालों के सोच की क्रूरता और अमानवीयता पर हमारा ध्यान जाना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

धूप निकलने से सर्दी से राहत मिली, खेतों में महकने लगी सरसों की फसल

सरसों की फसल की सुरक्षा के लिए खेतों पर किसान परिवार सहित दिन के साथ रात में भी पहरेदारी करने में लगे हुए हैं

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ तहसील के हरियाणा सीमावृति ग्रामीण सिंचित क्षेत्र में इन दिनों सरसों में जमकर महकने लगी है, जिससे खेतों में लंबी दूरी तक सरसों की लहलहाती फसल किसानों के लिए खुशी बनी हुई है एवं उनके चेहरों पर खुशी दिखाई दे रही है। वहीं किसान अपनी सरसों की फसल की सुरक्षा के लिए किसान अपने खेतों पर परिवार सहित दिन के साथ रात में पहरेदारी करने में लगे हुए हैं।

क्षेत्र के किसानों का कहना है कि कड़ाके की सर्दी के दौर के साथ ही सरसों यानी पीले सोने ने अपनी महक और बढ़ा दी है। हालात ये है कि सरसों में इन दिनों जमकर फूल आने लगे हैं। वहीं कुछ जगह सरसों के पौधों में फली आने के साथ दाने भी बनने लगे हैं, जिससे किसानों को इस वर्ष सरसों का अच्छा उत्पादन होने की उम्मीद बनी हुई है। भाकरां, सुधिवास, खैरु बड़ी, खैरु छोटी, बीराण, बालाण, ढाणी चनाणी, जीरामबास आदि गांवों में

■ 'अबकी बार सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो पीना सोना इस बार किसानों को मुनाफे की खेती साबित होगी'

सरसों की फसल गत दिनों हुई दो बार मावठ से चारों ओर खेतों में लहराने लगी है।

किसान राजरूप भाकर, बनवारीलाल मेहरा व चंद्रभान मितड आदि ने बताया कि अबकी बार सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो पीना सोना इस बार किसानों को मुनाफे की खेती साबित होगी। किसानों ने बताया कि इस बार तापमान अधिक होने से सरसों की बुवाई कुछ खेतों में नवंबर महीने के आखिरी में की गई थी, जो कि वह फसल कमजोर थी जो दिसंबर एवं जनवरी महीने में मावठ एवं सर्दी से ठीक होकर लहराने लगी है।

राजगढ़ तहसील के हरियाणा सीमावृति गाँवों में खेतों में सरसों की लहलहाती फसल किसानों के लिए खुशी बनी हुई है।

राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर में वाइस चांसलर्स सम्मेलन संपन्न

दो दिवसीय सम्मेलन में देशभर के 22 वाइस चांसलर्स ने भाग लिया

जोधपुर, (कासं)। राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर (एनएलयूजे) में आयोजित दो दिवसीय वाइस चांसलर्स सम्मेलन-2025 ''भारत में कानूनी शिक्षा का भविष्य'' विषय का रविवार को समापन हुआ। इस प्रतिष्ठित दो दिवसीय सम्मेलन में देशभर के 22 वाइस चांसलर्स ने भाग लिया। सम्मेलन ने कानूनी शिक्षा में नवाचार और सुधारों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया।

समापन सत्र में राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और कुलाधिपति न्यायमूर्ति एम.एम. श्रीवास्तव, कुलपति प्रोफेसर हरप्रीत कौर और कुलसचिव डॉ. सुनीता पंकज उपस्थिति रहे। समापन सत्र में पिछले दो दिनों की चर्चाओं का सारांश प्रस्तुत किया गया, जिसमें कानूनी शिक्षा में सुधार, अंतःविषय दृष्टिकोण और तकनीकी एकीकरण पर विशेष चर्चा हुई। कुलाधिपति न्यायमूर्ति एम.एम. श्रीवास्तव ने समाज की बदलती आवश्यकताओं के साथ विकसित होने वाली और नैतिक आधारों को बनाए रखने वाली कानूनी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन ने कानूनी शिक्षा को समावेशी, अभिनव

■ सम्मेलन ने कानूनी शिक्षा में नवाचार और सुधारों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया

और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाया है।

कुलपति प्रोफेसर हरप्रीत कौर ने सम्मेलन की सफलता में योगदान देने वाले सभी वाइस चांसलर्स और एनएलयूजे की टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्थानों के बीच सहयोग कानूनी शिक्षा को परिभाषित करने के लिए आवश्यक है। एनएलयूजे इस परिवर्तनकारी यात्रा में नेतृत्व करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कानूनी क्षेत्र में प्रभावकारी बदलाव के लिए सतत संवाद और ऐसे और कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कुलसचिव डॉ. सुनीता पंकज ने सम्मेलन की सार्थक चर्चाओं और निष्कर्षों को रेखांकित करते हुए इसे एनएलयूजे की यात्रा में एक मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि वाइस चांसलर्स और नीति-निर्माताओं द्वारा साझा किए गए विचार कानूनी शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए एक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करेंगे। उन्होंने सम्मेलन की सफलता में एनएलयूजे के शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की। एनएलयूजे ने कानूनी शिक्षा में सुधार के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और भविष्य में भी ऐसे संवाद जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया। वाइस चांसलर्स सम्मेलन 2025 ने कानूनी शिक्षा में उत्कृष्टता और नवाचार को बढ़ावा देने के सामूहिक संकल्प के साथ समापन किया।

जोधपुर नगरी हुई श्याममय, एक साथ श्याम बाबा की सौ मूर्तियों की स्थापना हुई

जोधपुर, (कासं)। राजस्थानभर में खाटू वाले श्याम बाबा के लगातार बढ़ते जा रहे पर्चे के बीच जोधपुर के श्याम भक्ति और सामाजिक सरोकारों को समर्पित श्याम भक्ति सेवा संस्थान ने ''घर-घर श्याम हर घर श्याम'' अभियान के तहत जोधपुर के गीता भवन में श्याम बाबा की 100 मूर्तियों की स्थापना की। इससे पूर्व शनिवार की शाम को विधि-विधान से सामूहिक पूजन और वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पंडितों के मंत्रोच्चारण के बाद बाबा के जयकारे लगाते हुए श्याम भक्त श्याम बाबा की मूर्ति को लेकर अपने-अपने मंदिरों में लगाने के लिए जाते नजर आए। श्याम भक्ति सेवा संस्थान की अध्यक्ष मोनिका प्रजापत ने बताया कि, खाटू वाले श्याम बाबा के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य के तहत हमारी संस्था के नीतिगत निर्णय के चलते जोधपुर के विभिन्न मंदिरों, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों, विश्वविद्यालयों, सामाजिक संगठनों, सरकारी गैर सरकारी कार्यालयों और विभिन्न प्रतिष्ठानों में श्याम बाबा की 100 मूर्तियां लगाने के संकल्प को साकार करते हुए अभियान को रविवार को गीता भवन में पूरा किया गया। यह आयोजन बिजौलाई आश्रम के महामंडलेश्वर सोमेश्वर गिरी महाराज, बड़ा रामद्वारा सूरसागर के मुख्य गादीपति राम प्रसाद महाराज, रामस्नेही सन्त अमृता राम महाराज, हाईकोर्ट न्यायाधीश मनोज कुमार गर्ग, मेडिटेशन विशेषज्ञ संगीता गर्ग, एनसीबी डायरेक्टर घनश्याम सोनी और गीता प्रचार मंडल के सचिव राजेश लोढ़ा के सानिध्य में किया गया। कार्यक्रम की आयोजन समिति में शामिल राजकुमार रामचंदानी, जगदीश कुमार, कृष्णा गौड़, लक्की गोयल, हेमंत लालवानी, रमेश खंडेलवाल, जीवन जाखड़, पुखराज जांगिड़, मोहित हेड़ा, जितेन्द्र राजपुरोहित, दीक्षित, कन्हैयालाल, नीतू कच्छवाहा, मंजू प्रजापति, रश्मि जांगिड़, ललिता शर्मा, प्रदीप कुमार, मनीष गहलोत, नवीन भाटी, गौतम

■ श्याम भक्ति सेवा संस्थान ने ''घर-घर श्याम हर घर श्याम'' अभियान के तहत जोधपुर के गीता भवन में श्याम बाबा की 100 मूर्तियों की स्थापना की

उपाध्याय और बिंदु टाक ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर उल्लेखनीय सेवाओं के लिए समाजसेवी जीवन जाखड़, रमेश खंडेलवाल पुखराज जांगिड़, कन्हैयालाल सबनानी, मूर्तिकार रूक्मा बावरी, जलाल खान, शहजाद खान और महेंद्र गहलोत को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महामंडलेश्वर सोमेश्वर गिरी महाराज ने श्याम बाबा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए जोधपुर में श्याम बाबा की भक्ति के इस अनूठे उदाहरण की सराहना करते हुए कहा कि श्याम बाबा का पर्चा अब पूरे पश्चिम में राजस्थान और मारवाड़ में भी सर चढ़कर बोले रहा है, संस्थान द्वारा जिस उद्देश्य से संकल्प लेकर इसे पूरा किया गया है यह अपने आप में विशिष्ट बात है ही लेकिन जिस तरह श्याम भक्त बड़ी संख्या में उमड़े है यह इस बात का धोतक है कि आने वाले समय में और अधिक श्याम बाबा की मूर्तियां लगानी पड़ेगी।

बड़ा रामद्वारा के मुख्य महंत रामप्रसाद महाराज ने श्याम भक्ति सेवा संस्थान द्वारा श्याम भक्तों के लिए घर-घर श्याम हर घर श्याम अभियान को संकल्प लेकर पूरा करने की बधाई देते हुए कहा कि श्याम भक्तों के सामूहिक प्रयास से इस तरह का अपने आप में एक अनूठा कार्य किसी रिकॉर्ड से काम नहीं है लेकिन इस रिकॉर्ड में हजारों लाखों करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं को स्थान मिला है यह बड़ी बात है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पति मनोज कुमार गर्ग ने श्याम बाबा के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि, हारे के सहारे के नाम से विख्यात खाटू वाले श्याम बाबा के प्रति श्याम भक्तों का जिस तरह भाव उमड़कर सामने आ रहा था उसको और मजबूत करने के लिए श्याम भक्ति सेवा संस्थान ने एक साथ 100 मूर्तियां की पूजा-अर्चना कराकर विधि-विधान से वितरण करना, श्याम बाबा के अलावा श्याम भक्तों के सम्मान करने जैसा है, यह संकल्प भावनाओं से जुड़ा हुआ है इसे शब्दों में विवेचित नहीं किया जा सकता।

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के निदेशक घनश्याम सोनी ने बाकायदा शंख बजाकर कार्यक्रम का शंखनाद किया और कहा कि श्याम बाबा के प्रति करोड़ों लोगों की श्रद्धा जुड़ी हुई है, मगर सूर्यनगरी जोधपुर में श्याम भक्ति सेवा संस्थान द्वारा जिस तरह की पहल की गई है उसी से लगता है कि खाटू श्याम की तरह जोधपुर भी श्याम बाबा की पूजा-अर्चना के लिए अपनी एक अलग पहचान कायम करेगा। गीता प्रचार मंडल के सचिव राजेश लोढ़ा ने आयोजन को लेकर आभार जताया।

प्रदेश स्तरीय आयुर्वेद नर्सेज़ आमुखीकरण कार्यक्रम शुरू

जोधपुर, (कासं)। रातानाडा स्थित यूथ हॉस्टल में आयोजित प्रदेश स्तरीय आयुर्वेद नर्सेज़ आमुखीकरण कार्यक्रम के अंतिम बैच का शुभारंभ भगवान धन्वंतरि की पूजा-अर्चना के साथ किया गया।

आयुर्वेद विभाग के निदेशक डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने वर्चुअल माध्यम से नर्सेज को संबोधित करते हुए कहा कि आयुर्वेद नर्सेज समाज के स्वास्थ्य का आधार हैं। आपकी सेवा भावना और ज्ञान से आयुर्वेद को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने नर्सेज को उनके कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने और आयुर्वेद की छवि को सशक्त बनाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर डाबर इंडिया लि. के प्रहलाद राय अतिरिक्त निदेशक जोधपुर संभाग डॉ. राजीव लोचन शर्मा, उप निदेशक डॉ. शरीफ खान और जिला आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रभारी डॉ. अशोक कुमार मित्तल उपस्थित थे। उन्होंने नर्सेज को समाज में अपनी सेवाओं को सर्वजन हिताय की भावना से करने के लिए प्रेरित किया। आज के सत्र में बीकानेर से डॉ. जितेंद्र कुमार भाटी, उदयपुर से डॉ. शोभालाल औदिच्य और डॉ. हेमलता सोनी ने अपने विचार रखे। उन्होंने नर्सिंग के दायित्व, औषधियों के प्रबंधन और समुदाय में नर्सेज की भूमिका पर चर्चा की। आयोजन में डॉ सुखवीर सिंह, डॉ. रामलाल, व. कम्पाउंडर अब्दुल सलाम चिश्ती, सलीम सुल्तान, महेंद्र डूडी, विक्रम, मालाराम, अनोपाराम ने सहयोग किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 20 जनवरी, 2025

माघ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र रात्रि 8:30 तक, सुकर्मा योग रात्रि 2:52 तक, वणिज करण प्रातः 9:59 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन 9:59 तक है। रवियोग रात्रि 8:30 तक रहेगा। भद्रा प्रातः 9:59 से रात्रि 11:19 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:59 से 11:18 तक, चर 1:57 से 3:16 तक, लाभ-अमृत 3:16 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:55

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।